وَالْاَرْضِ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

और ज़मीन में है और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है

اٰيَاتُهَا ١٣ ۞ ٦٠ سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ ٩١ ۞ رُكُوْعَاتُهَا ٢

सूरए मुम्तह़िनह मदनिय्या है, इस में तेरह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ

ऐ ईमान वालो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ[2] तुम उन्हें ख़बरें

اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ

पहुंचाते हो दोस्ती से ह़ालां कि वोह मुन्किर हैं उस ह़क़ के जो तुम्हारे पास आया[3] घर से जुदा करते हैं[4]

1 : सूरए मुम्तह़िनह मदनिय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, तेरह 13 आयतें, तीन सो अड़तालीस 348 कलिमे, एक हज़ार पांच सो दस 1510 ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी कुफ़्फ़ार को। **शाने नुज़ूल :** बनी हाशिम के ख़ानदान की एक बांदी सारह मदीनए त़य्यिबा में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर में ह़ाज़िर हुई जब कि हुज़ूर फ़त्ह़े मक्का का सामान फ़रमा रहे थे, हुज़ूर ने उस से फ़रमाया : क्या तू मुसल्मान हो कर आई ? उस ने कहा : नहीं, फ़रमाया : क्या हिजरत कर के आई ? अ़र्ज़ किया : नहीं, फ़रमाया : फिर क्यूं आई ? उस ने कहा : मोह़ताजी से तंग हो कर। बनी अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने उस की इमदाद की कपड़े बनाए सामान दिया, ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه उस से मिले, उन्हों ने उस को दस दीनार दिये एक चादर दी और एक ख़त़ अहले मक्का के पास उस की मा'रिफ़त भेजा जिस का मज़्मून येह था कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तुम पर ह़म्ले का इरादा रखते हैं तुम से अपने बचाव की जो तदबीर हो सके करो, सारह येह ख़त़ ले कर रवाना हो गई **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब को इस की ख़बर दी, हुज़ूर ने अपने चन्द अस्ह़ाब को जिन में ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه भी थे घोड़ों पर रवाना किया और फ़रमाया मक़ाम रौज़ा ख़ाख़ पर तुम्हें एक मुसाफ़िर औ़रत मिलेगी उस के पास ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़ का ख़त़ है जो अहले मक्का के नाम लिखा गया है, वोह ख़त़ उस से ले लो और उस को छोड़ दो, अगर इन्कार करे तो उस की गरदन मार दो, येह ह़ज़रात रवाना हुए और औ़रत को ठीक उसी मक़ाम पर पाया जहां हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया था, उस से ख़त़ मांगा वोह इन्कार कर गई और क़सम खा गई, सह़ाबा ने वापसी का क़स्द किया ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ब क़सम फ़रमाया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़बर ख़िलाफ़ हो ही नहीं सकती और तलवार खींच कर औ़रत से फ़रमाया या ख़त़ निकाल या गरदन रख, जब उस ने देखा कि ह़ज़रत बिल्कुल आमादए क़त्ल हैं तो अपने जूड़े में से ख़त़ निकाला, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़ात़िब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को बुला कर फ़रमाया कि ऐ ह़ात़िब ! इस का क्या बाइ़स ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मैं जब से इस्लाम लाया कभी मैं ने कुफ़्र नहीं किया और जब से हुज़ूर की नियाज़ मन्दी मुयस्सर आई कभी हुज़ूर की ख़ियानत न की और जब से अहले मक्का को छोड़ा कभी उन की मह़ब्बत न आई। लेकिन वाक़िआ़ येह है कि मैं क़ुरैश में रहता था और उन की क़ौम से न था, मेरे सिवाए और जो मुहाजिरीन हैं उन के मक्कए मुकर्रमा में रिश्तेदार हैं जो उन के घरबार की निगरानी करते हैं, मुझे अपने घर वालों का अन्देशा था, इस लिये मैं ने येह चाहा कि मैं अहले मक्का पर कुछ एह़सान रख दूं ताकि वोह मेरे घर वालों को न सताएं और येह मैं यक़ीन से जानता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला अहले मक्का पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाने वाला है, मेरा ख़त़ उन्हें बचा न सकेगा, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन का येह उ़ज़्र क़बूल फ़रमाया और उन की तस्दीक़ की। ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुझे इजाज़त दीजिये इस मुनाफ़िक़ की गरदन मार दूं, हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ उ़मर ! (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) **अल्लाह** तआ़ला ख़बरदार है जब ही उस ने अहले बद्र के ह़क़ में फ़रमाया कि जो चाहो करो मैं ने तुम्हें बख़्श दिया, येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के आंसू जारी हो गए और येह आयात नाज़िल हुई। 3 : या'नी इस्लाम और क़ुरआन 4 : या'नी मक्कए मुकर्रमा से।

الرَّسُوْلَ وَ اِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا

रसूल को और तुम्हें इस पर कि तुम अपने रब **अल्लाह** पर ईमान लाए अगर तुम निकले हो मेरी राह में

فِيْ سَبِيْلِيْ وَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۖ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَ اَنَا اَعْلَمُ

जिहाद करने और मेरी रिज़ा चाहने को तो उन से दोस्ती न करो तुम उन्हें खुफ़्या पयाम महब्बत का भेजते हो और मैं खूब जानता हूं

بِمَاۤ اَخْفَيْتُمْ وَ مَاۤ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَ مَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ

जो तुम छुपाओ और जो ज़ाहिर करो और तुम में जो ऐसा करे वोह बेशक सीधी राह

السَّبِيْلِ ﴿۱﴾ اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّ يَبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ

से बहका अगर तुम्हें पाएं[5] तो तुम्हारे दुश्मन होंगे और तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ[6]

اَيْدِيَهُمْ وَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ؕ﴿۲﴾ لَنْ تَنْفَعَكُمْ

और अपनी ज़बानें[7] बुराई के साथ दराज़ करेंगे और उन की तमन्ना है कि किसी तरह तुम काफ़िर हो जाओ[8] हरगिज़ काम न आएंगे

اَرْحَامُكُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُكُمْ ۚۛ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚۛ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا

तुम्हें तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद[9] क़ियामत के दिन तुम्हें उन से अलग कर देगा[10] और **अल्लाह**

معانقة ١٢ السما ع الوقف على القيمة ج ١٢

تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۳﴾ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَ الَّذِيْنَ

तुम्हारे काम देख रहा है बेशक तुम्हारे लिये अच्छी पैरवी थी[11] इब्राहीम और उस के साथ

مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَ مِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ

वालों में[12] जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा[13] बेशक हम बेज़ार हैं तुम से और उन से जिन्हें **अल्लाह** के सिवा

اللّٰهِ ۫ كَفَرْنَا بِكُمْ وَ بَدَا بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَ الْبَغْضَآءُ اَبَدًا

पूजते हो हम तुम्हारे मुन्किर हुए[14] और हम में और तुम में दुश्मनी और अ़दावत ज़ाहिर हो गई हमेशा के लिये

حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗۤ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ

जब तक तुम एक **अल्लाह** पर ईमान न लाओ मगर इब्राहीम का अपने बाप से कहना कि मैं ज़रूर तेरी मग़्फ़िरत

5 : या'नी अगर कुफ़्फ़ार तुम पर मौक़अ़ पा जाएं 6 : ज़र्ब व क़त्ल के साथ 7 : सब्बो शत्म और 8 : तो ऐसे लोगों को दोस्त बनाना और उन से भलाई की उम्मीद रखना और उन की अ़दावत से ग़ाफ़िल रहना हरगिज़ न चाहिये। 9 : जिन की वज्ह से तुम कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मुवालात करते हो 10 : कि फ़रमां बरदार जन्नत में होंगे और काफ़िर ना फ़रमान जहन्नम में। 11 : हज़रते हातिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दूसरे मोमिनीन को ख़िताब है और सब को हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की इक़्तिदा करने का हुक्म है कि दीन के मुआमले में अहले क़राबत के साथ उन का तरीक़ा इख़्तियार करें। 12 : साथ वालों से अहले ईमान मुराद हैं। 13 : जो मुश्रिक थी 14 : और हम ने तुम्हारे दीन की मुख़ालफ़त

www.dawateislami.net

لَكَ وَمَآ اَمۡلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنۡ شَیۡءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَیۡكَ تَوَكَّلۡنَا وَاِلَیۡكَ

चाहूंगा[15] और मैं अल्लाह के सामने तेरे किसी नफ़्अ़ का मालिक नहीं[16] ऐ हमारे रब हम ने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही त़रफ़

اَنَبۡنَا وَاِلَیۡكَ الۡمَصِیۡرُ ﴿۴﴾ رَبَّنَا لَا تَجۡعَلۡنَا فِتۡنَةً لِّلَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا وَ

रुजूअ़ लाए और तेरी ही त़रफ़ फिरना है[17] ऐ हमारे रब हमें काफ़िरों की आज़्माइश में न डाल[18] और

اغۡفِرۡ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَكِیۡمُ ﴿۵﴾ لَقَدۡ كَانَ لَكُمۡ فِیۡهِمۡ

हमें बख़्श दे ऐ हमारे रब बेशक तू ही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है बेशक तुम्हारे लिये[19] उन में

اُسۡوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنۡ كَانَ یَرۡجُوا اللّٰهَ وَالۡیَوۡمَ الۡاٰخِرَ ؕ وَمَنۡ یَّتَوَلَّ

अच्छी पैरवी थी[20] उसे जो अल्लाह और पिछले दिन का उम्मीद वार हो[21] और जो मुंह फेरे[22]

فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الۡغَنِیُّ الۡحَمِیۡدُ ﴿۶﴾ ع عَسَی اللّٰهُ اَنۡ یَّجۡعَلَ بَیۡنَكُمۡ وَبَیۡنَ ع

तो बेशक अल्लाह ही बे नियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा क़रीब है कि अल्लाह तुम में और उन में जो उन

الَّذِیۡنَ عَادَیۡتُمۡ مِّنۡهُمۡ مَّوَدَّةً ؕ وَاللّٰهُ قَدِیۡرٌ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ﴿۷﴾

में से[23] तुम्हारे दुश्मन हैं दोस्ती कर दे[24] और अल्लाह क़ादिर है[25] और अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है

لَا یَنۡهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِیۡنَ لَمۡ یُقَاتِلُوۡكُمۡ فِی الدِّیۡنِ وَلَمۡ یُخۡرِجُوۡكُمۡ

अल्लाह तुम्हें उन से[26] मन्अ़ नहीं करता जो तुम से दीन में न लड़े और तुम्हें तुम्हारे

مِّنۡ دِیَارِكُمۡ اَنۡ تَبَرُّوۡهُمۡ وَتُقۡسِطُوۡۤا اِلَیۡهِمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ

घरों से न निकाला कि उन के साथ एह़सान करो और उन से इन्साफ़ का बरताव बरतो बेशक इन्साफ़ वाले

इख़्तियार की। **15 :** येह क़ाबिले इत्तिबाअ़ नहीं है क्यूं कि वोह एक वा'दे की बिना पर था और जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡهِ السَّلَام को ज़ाहिर हो गया कि वोह कुफ़्र पर मुस्तक़िल है तो आप ने उस से बेज़ारी की, लिहाज़ा येह किसी के लिये जाइज़ नहीं कि अपने बे ईमान रिश्तेदार के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करे। **16 :** अगर तू उस की ना फ़रमानी करे और शिर्क पर क़ाइम रहे। (خازن) **17 :** येह भी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡهِ السَّلَام की और उन मोमिनीन की दुआ़ है जो आप के साथ थे और मा क़ब्ल इस्तिस्ना के साथ मुत्तसिल है लिहाज़ा मोमिनीन को इस दुआ़ में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡهِ السَّلَام की इत्तिबाअ़ करनी चाहिये। **18 :** उन्हें हम पर ग़लबा न दे कि वोह अपने आप को ह़क़ पर गुमान करने लगें। **19 :** ऐ उम्मते ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَسَلَّم! **20 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡهِ السَّلَام और उन के साथ वालों में। **21 :** अल्लाह तआ़ला की रह़मत व सवाब और राह़ते आख़िरत का त़ालिब हो और अ़ज़ाबे इलाही से डरे। **22 :** ईमान से और कुफ़्फ़ार से दोस्ती करे **23 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का में से **24 :** इस त़रह़ कि उन्हें ईमान की तौफ़ीक़ दे, चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने ऐसा किया और बा'दे फ़त्ह़े मक्का उन में से कसीरुत्ता'दाद लोग ईमान ले आए और मोमिनीन के दोस्त और भाई बन गए और बाहमी मह़ब्बतें बढ़ीं। **शाने नुज़ूल :** जब ऊपर की आयात नाज़िल हुईं तो मोमिनीन ने अपने अहले क़राबत की अ़दावत में तशद्दुद किया उन से बेज़ार हो गए और इस मुआ़मले में बहुत सख़्त हो गए तो अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर उन्हें उम्मीद दिलाई कि उन कुफ़्फ़ार का ह़ाल बदलने वाला है और येह आयत नाज़िल हुई। **25 :** दिल बदलने और ह़ाल तब्दील करने पर **26 :** या'नी उन काफ़िरों से। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत ख़ुज़ाआ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَسَلَّم से इस शर्त़ पर सुल्ह़ की थी कि न आप से

www.dawateislami.net

الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٨﴾ اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ

अल्लाह को महबूब हैं अल्लाह तुम्हें उन्ही से मन्अ़ करता है जो तुम से दीन में लड़े या

اَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَ ظٰهَرُوْا عَلٰۤى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَ مَنْ

तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला या तुम्हारे निकालने पर मदद की कि उन से दोस्ती करो[27] और जो

يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا جَآءَكُمُ

उन से दोस्ती करे तो वोही सितमगार हैं ऐ ईमान वालो जब तुम्हारे पास

الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ

मुसल्मान औ़रतें कुफ़्रिस्तान से अपने घर छोड़ कर आएं तो उन का इम्तिहान कर लो[28] अल्लाह उन के ईमान का हाल बेहतर जानता है फिर अगर

عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَ

वोह तुम्हें ईमान वालियां मा'लूम हों तो उन्हें काफ़िरों को वापस न दो न येह[29] उन्हें हलाल[30]

لَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَ اٰتُوْهُمْ مَّاۤ اَنْفَقُوْا ؕ وَ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ

न वोह इन्हें हलाल[31] और उन के काफ़िर शोहरों को दे दो जो उन का ख़र्च हुवा[32] और तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि

क़िताल करेंगे न आप के मुख़ालिफ़ को मदद देंगे। अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों के साथ सुलूक करने की इजाज़त दी। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने फ़रमाया कि येह आयत उन की वालिदा अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہما के ह़क़ में नाज़िल हुई, उन (ह़ज़रते अस्मा رضی اللہ تعالٰی عنہا) की वालिदा मदीनए तृय्यिबा में उन के लिये तोह़फ़े ले कर आई थीं और थीं मुश्रिका तो ह़ज़रते अस्मा ने उन के हदाया क़बूल न किये और उन्हें अपने घर में आने की इजाज़त न दी और रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم से दरयाफ़्त किया कि क्या हुक्म है? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने इजाज़त दी कि उन्हें घर में बुलाएं, उन के हदाया क़बूल करें, उन के साथ अच्छा सुलूक करें। **27 :** या'नी ऐसे काफ़िरों से दोस्ती मम्नूअ़ है। **28 :** कि उन की हिजरत ख़ालिस दीन के लिये है, ऐसा तो नहीं है कि उन्हों ने शोहरों की अ़दावत में घर छोड़ा हो, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि उन औ़रतों को क़सम दी जाए कि वोह न शोहरों की अ़दावत में निकली हैं और न किसी दुन्यवी वज्ह से, उन्हों ने सिर्फ़ अपने दीन व ईमान के लिये हिजरत की है। **29 :** मुसल्मान औ़रतें **30 :** या'नी काफ़िरों को **31 :** या'नी न काफ़िर मर्द मुसल्मान औ़रतों को ह़लाल। **मस्अला :** औ़रत मुसल्मान हो कर काफ़िर मर्द की ज़ौजिय्यत से ख़ाली हो गई। **32 :** या'नी जो मह्र उन्हों ने उन औ़रतों को दिये थे वोह उन्हें वापस कर दो, येह हुक्म अहले ज़िम्मा के लिये है जिन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई, लेकिन ह़र्बी औ़रतों के मह्र वापस करना न वाजिब न सुन्नत (وَ اِنْ كَانَ الْاَمْرُ بِاِيْتَاءِ مَا اَنْفَقُوْا لِلْوُجُوْبِ فَهُوَ مَنْسُوْخٌ وَّ اِنْ كَانَ لِنُدْبٍ كَمَا هُوَ قَوْلُ الشَّافِعِيْ فَلَا) **मस्अला :** और येह मह्र देना उस सूरत में है जब कि औ़रत का काफ़िर शोहर उस को त़लब करे और अगर न त़लब करे तो उस को कुछ न दिया जाएगा। **मस्अला :** इसी त़रह़ अगर काफ़िर ने उस मुहाजिरा को मह्र नहीं दिया था तो भी वोह कुछ न पाएगा। **शाने नुज़ूल :** येह आयत सुल्ह़े हुदैबिया के बा'द नाज़िल हुई, सुल्ह़ में येह शर्त़ थी कि मक्का वालों में से जो शख़्स ईमान ला कर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो उस को अहले मक्का वापस ले सकते हैं, इस आयत में येह बयान फ़रमा दिया गया कि येह शर्त़ सिर्फ़ मर्दों के लिये है औ़रतों की तसरीह़ अ़ह्द नामे में नहीं न औ़रतें इस क़रार दाद में दाख़िल हो सकती हैं क्यूं कि मुसल्मान औ़रत काफ़िर के लिये ह़लाल नहीं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत हुक्मे अव्वल की नासिख़ है येह इस तक़्दीर पर है कि औ़रतें अ़ह्दे सुल्ह़ में दाख़िल हों, मगर औ़रतों का इस अ़ह्द में दाख़िल होना सह़ीह़ नहीं क्यूं कि ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से अ़ह्द नामे के येह अल्फ़ाज़ मरवी हैं (لَا يَاْتِيْكَ مِنَّا رَجُلٌ وَّ اِنْ كَانَ عَلٰى دِيْنِكَ اِلَّا رَدَدْتَهٗ) या'नी हम में से जो मर्द आप के पास पहुंचे ख़्वाह वोह आप के दीन ही पर हो आप उस को वापस देंगे।

www.dawateislami.net

تَنۡكِحُوۡهُنَّ اِذَاۤ اٰتَيۡتُمُوۡهُنَّ اُجُوۡرَهُنَّ ؕ وَلَا تُمۡسِكُوۡا بِعِصَمِ الۡكَوَافِرِ

उन से निकाह़ कर लो[33] जब उन के महर उन्हें दो[34] और काफ़िरनियों के निकाह़ पर जमे न रहो[35]

وَسۡـَٔلُوۡا مَاۤ اَنۡفَقۡتُمۡ وَلۡيَسۡـَٔلُوۡا مَاۤ اَنۡفَقُوۡا ؕ ذٰلِكُمۡ حُكۡمُ اللّٰهِ ؕ يَحۡكُمُ

और मांग लो जो तुम्हारा ख़र्च हुवा[36] और काफ़िर मांग लें जो उन्हों ने ख़र्च किया[37] येह **अल्लाह** का हुक्म है वोह तुम में

بَيۡنَكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿۱۰﴾ وَاِنۡ فَاتَكُمۡ شَىۡءٌ مِّنۡ اَزۡوَاجِكُمۡ اِلَى

फ़ैसला फ़रमाता है और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है और अगर मुसल्मानों के हाथ से उन की कुछ औ़रतें काफ़िरों की त़रफ़

الۡكُفَّارِ فَعَاقَبۡتُمۡ فَاٰتُوا الَّذِيۡنَ ذَهَبَتۡ اَزۡوَاجُهُمۡ مِّثۡلَ مَاۤ اَنۡفَقُوۡا ؕ

निकल जाएं[38] फिर तुम काफ़िरों को सज़ा दो[39] तो जिन की औ़रतें जाती रही थीं[40] ग़नीमत में से उन्हें उतना दे दो जो उन का ख़र्च हुवा था[41]

وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىۡۤ اَنۡتُمۡ بِهٖ مُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۱﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ اِذَا جَآءَكَ

और **अल्लाह** से डरो जिस पर तुम्हें ईमान है ऐ नबी जब तुम्हारे ह़ुज़ूर मुसल्मान

الۡمُؤۡمِنٰتُ يُبَايِعۡنَكَ عَلٰٓى اَنۡ لَّا يُشۡرِكۡنَ بِاللّٰهِ شَيۡـًٔا وَّلَا يَسۡرِقۡنَ وَلَا

औ़रतें ह़ाज़िर हों इस पर बैअ़त करने को कि **अल्लाह** का शरीक कुछ न ठहराएंगी और न चोरी करेंगी और न

يَزۡنِيۡنَ وَلَا يَقۡتُلۡنَ اَوۡلَادَهُنَّ وَلَا يَاۡتِيۡنَ بِبُهۡتَانٍ يَّفۡتَرِيۡنَهٗ بَيۡنَ

बदकारी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी[42] और न वोह बोहतान लाएंगी जिसे अपने हाथों

33 : या'नी मुहाजिरा औ़रतों से, अगर्चे दारुल ह़र्ब में उन के शोहर हों क्यूं कि इस्लाम लाने से वोह उन शोहरों पर ह़राम हो गईं और उन की ज़ौजिय्यत में न रहीं। **मस्अला :** وَاحۡتَجَّ بِهٖ اَبُوۡ حَنِيۡفَةَ عَلٰى اَنۡ لَّاعِدَّةَ عَلَى الۡمُهَاجِرَةِ فَيَجُوۡزُلَهَا التَّزَوُّجُ مِنۡ غَيۡرِ عِدَّةٍ خِلَافًا لَّهُمَا **34 :** महर देने से मुराद इस को अपने ज़िम्मे लाज़िम कर लेना है अगर्चे बिलफ़े'ल न दिया जाए। **मस्अला :** इस से येह भी साबित हुवा कि उन औ़रतों से निकाह़ करने पर नया महर वाजिब होगा उन के शोहरों को जो अदा कर दिया गया वोह उस में मुजरा व मह़सूब (शुमार) न होगा। **35 :** या'नी जो औ़रतें दारुल ह़र्ब में रह गईं या मुरतद्दा हो कर दारुल ह़र्ब में चली गईं उन से ज़ौजिय्यत का अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) न रखो, चुनान्चे येह आयत नाज़िल होने के बा'द अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने उन काफ़िरा औ़रतों को त़लाक़ दे दी जो मक्कए मुकर्रमा में थीं। **मस्अला :** अगर मुसल्मान की औ़रत (مَعَاذَ اللّٰه) मुरतद हो जाए तो इस के क़ैदे निकाह़ से बाहर न होगी (عَلَيۡهِ الۡفَتۡوٰى زَجۡرًا وَّ تَيَسُّرًا) **36 :** या'नी उन औ़रतों को तुम ने जो महर दिये थे वोह उन काफ़िरों से वुसूल कर लो जिन्हों ने उन से निकाह़ किया। **37 :** अपनी औ़रतों पर जो हिजरत कर के दारुल इस्लाम में चली आईं उन के मुसल्मान शोहरों से जिन्हों ने उन से निकाह़ किया। **38 शाने नुज़ूल :** इस आयत के नाज़िल होने के बा'द मुसल्मानों ने तो मुहाजिरा औ़रतों के महर उन के काफ़िर शोहरों को अदा कर दिये और काफ़िरों ने मुरतद्दात के महर मुसल्मानों को अदा करने से इन्कार किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **39 :** जिहाद में और उन से ग़नीमत पाओ। **40 :** या'नी मुरतद्दा हो कर दारुल ह़र्ब में चली गई थीं। **41 :** उन औ़रतों के महर देने में। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُمَا ने फ़रमाया कि मोमिनीने मुहाजिरीन की औ़रतों में से छ[6] औ़रतें ऐसी थीं जिन्हों ने दारुल ह़र्ब को इख़्तियार किया और मुश्रिकीन के साथ लाह़िक़ हुईं और मुरतद हो गईं, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने उन के शोहरों को माले ग़नीमत से उन के महर अ़त़ा फ़रमाए। **फ़ाएदा :** इन आयतों में मुहाजिरात के इम्तिह़ान और कुफ़्फ़ार ने जो अपनी बीबियों पर ख़र्च किया हो वोह बा'दे हिजरत उन्हें देना और मुसल्मानों ने जो अपनी बीबियों पर ख़र्च किया हो वोह उन के मुरतद हो कर काफ़िरों से मिल जाने के बा'द उन से मांगना और जिन की बीबियां मुरतद हो कर चली गई हों उन्हों ने जो उन पर ख़र्च किया था वोह उन्हें माले ग़नीमत में से देना येह तमाम

www.dawateislami.net

اَيْدِيْهِنَّ وَ اَرْجُلِهِنَّ وَ لَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَ اسْتَغْفِرْ

और पाउं के दरमियान या'नी मौज़ूए विलादत में उठाएं[43] और किसी नेक बात में तुम्हारी ना फ़रमानी न करेंगी[44] तो उन से बैअ़त लो और अल्लाह से

لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا

उन की मग़्फ़िरत चाहो[45] बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ऐ ईमान वालो उन लोगों

تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا

से दोस्ती न करो जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है[46] वोह आख़िरत से आस तोड़ बैठे हैं[47] जैसे

يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿۱۳﴾ ع

काफ़िर आस तोड़ बैठे क़ब्र वालों से[48]

अह़्काम मन्सूख़ हो गए आयते सैफ़ या आयते ग़नीमत या सुन्नत से क्यूं कि येह अह़्काम जभी तक बाक़ी रहे जब तक येह अ़हद रहा और जब वोह अ़हद उठ गया तो अह़्काम भी न रहे। **42 :** जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत में दस्तूर था कि लड़कियों को ब ख़याले आ़र व ब अन्देशए नादारी ज़िन्दा दफ़्न कर देते थे, इस से और हर क़त्ले नाह़क़ से बाज़ रहना इस अ़हद में शामिल है। **43 :** या'नी पराया बच्चा ले कर शोहर को धोका दें और उस को अपने पेट से जना हुवा बताएं जैसा कि जाहिलिय्यत के ज़माने में दस्तूर था। **44 :** नेक बात अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी है। **45 :** मरवी है कि जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم रोज़े फ़त्हे मक्का मर्दों की बैअ़त ले कर फ़ारिग़ हुए तो कोहे सफ़ा पर औ़रतों से बैअ़त लेना शुरूअ़ की और ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه नीचे खड़े हुए हुज़ूर का कलामे मुबारक औ़रतों को सुनाते जाते थे, हिन्द बिन्ते उ़त्बा अबू सुफ़्यान की बीवी ख़ौफ़ज़दा बुर्क़अ़ पहन कर इस तरह़ ह़ाज़िर हुई कि पहचानी न जाए, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं तुम से इस बात पर बैअ़त लेता हूं कि तुम अल्लाह तआ़ला के साथ किसी चीज़ को शरीक न करो, हिन्द ने सर उठा कर कहा कि आप हम से वोह अ़हद लेते हैं जो हम ने आप को मर्दों से लेते नहीं देखा और उस रोज़ मर्दों से सिर्फ़ इस्लाम व जिहाद पर बैअ़त ली गई थी, फिर हुज़ूर ने फ़रमाया : और चोरी न करेंगी, तो हिन्द ने अ़र्ज़ किया कि अबू सुफ़्यान बख़ील आदमी हैं और मैं ने उन का माल ज़रूर लिया है मैं नहीं समझी मुझे ह़लाल हुवा या नहीं, अबू सुफ़्यान ह़ाज़िर थे उन्हों ने कहा जो तू ने पहले लिया और जो आयिन्दा ले सब ह़लाल, इस पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाया और इर्शाद किया : तू हिन्द बिन्ते उ़त्बा है, अ़र्ज़ किया : जी हां जो कुछ मुझ से क़ुसूर हुए हैं मुआ़फ़ फ़रमाइये फिर हुज़ूर ने फ़रमाया : और न बदकारी करेंगी, तो हिन्द ने कहा क्या कोई आज़ाद औ़रत बदकारी करती है, फिर फ़रमाया : न अपनी औलाद को क़त्ल करें। हिन्द ने कहा : हम ने छोटे छोटे पाले जब बड़े हो गए तुम ने उन्हें क़त्ल कर दिया, तुम जानो और वोह जानें, उस का लड़का ह़न्ज़ला बिन अबी सुफ़्यान बद्र में क़त्ल कर दिया गया था, हिन्द की येह गुफ़्तगू सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को बहुत हंसी आई फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि अपने हाथ पाउं के दरमियान कोई बोहतान न घड़ेंगी, हिन्द ने कहा बख़ुदा बोहतान बहुत बुरी चीज़ है और हुज़ूर हम को नेक बातों और बरतर ख़स्लतों का हुक्म देते हैं, फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि किसी नेक बात में रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना फ़रमानी न करेंगी, इस पर हिन्द ने कहा कि इस मजलिस में हम इस लिये ह़ाज़िर ही नहीं हुए कि अपने दिल में आप की ना फ़रमानी का ख़याल आने दें औ़रतों ने इन तमाम उमूर का इक़रार किया और चार सो सत्तावन औ़रतों ने बैअ़त की, इस बैअ़त में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुसाफ़ह़ा न फ़रमाया और औ़रतों को दस्ते मुबारक छूने न दिया, बैअ़त की कैफ़िय्यत में येह भी बयान किया गया है कि एक क़दह़ पानी में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक डाला फिर उसी में औ़रतों ने अपने हाथ डाले और येह भी कहा गया है कि बैअ़त कपड़े के वासिते़ से ली गई और बई़द नहीं है कि दोनों सूरतें अ़मल में आई हों। **मसाइल :** बैअ़त के वक़्त मिक्राज़ का इस्ति'माल मशाइख़ का त़रीक़ा है, येह भी कहा गया है कि येह ह़ज़रते अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की सुन्नत है। ख़िलाफ़त के साथ टोपी देना मशाइख़ का मा'मूल है और कहा गया है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मन्क़ूल है। औ़रतों की बैअ़त में अजनबिय्या का हाथ छूना ह़राम है। या बैअ़त ज़बान से हो या कपड़े वग़ैरा के वासिते़ से। **46 :** उन लोगों से मुराद यहूद हैं। **47 :** क्यूं कि उन्हें कुतुबे साबिक़ा से मा'लूम हो चुका था और वोह ब यक़ीन जानते थे कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं और यहूद ने इस की तक्ज़ीब की है, इस लिये उन्हें अपनी मग़्फ़िरत की उम्मीद नहीं। **48 :** फिर दुन्या में वापस आने की, या येह मा'ना हैं कि यहूद सवाबे आख़िरत से ऐसे ना उम्मीद हुए जैसा कि मरे हुए काफ़िर अपनी क़ब्रों में अपने ह़ाल को जान कर सवाबे आख़िरत से बिल्कुल मायूस हैं।

www.dawateislami.net